कुशीनगर जनपद का पचफेड़ा गॉव : ग्रामीण विकास एवं सामाजिक परिवर्तन की अनुकरणीय पहल

व्रजेन्द्र कुमार पाण्डेय*

भूमिकाः–

पूर्वी उत्तर प्रदेश के पिछड़े जिलों में शुमार कुशीनगर के अति पिछड़े विकास खण्डों में से एक विशुनपुरा के धौरहरा न्याय पंचायत के अन्तर्गत आने वाला गॉव ''पचफेड़ा'' जो जिला मुख्यालय से लगभग 12 किमी0 की दूरी पर उत्तर दिशा में तथा अपने विकास खण्ड मुख्यालय से लगभग 3 किमी0 की दूरी पर पूरब दिशा में स्थित है। पचफेड़ा के पूरब लगभग 2 किमी0 पर ऐतिहासिक बांसी नदी बहती है। जिसके किस्से भगवान रामचन्द्र के विवाह से जुड़े हुए हैं तथा यही नदी विशुनपुरा कुशीनगर व उत्तर प्रदेश की सीमा का सीमाकंन बिहार प्रान्त से करती है।

पचफेड़ा के दक्षिण लगभग 3 किमी0 की दुरी पर झरही नाला बहता है तथा पचफेड़ा के उत्तर लगभग 14 किमी0 की दूरी पर कुशीनगर का शोक कही जाने वाली नारायणी नदी' बहती है, जिसे '**बूढी गण्डक** भी कहते हैं। इस प्रकार पचफेड़ा गाँव तीन ओर से नदियों से घिरा हुआ एक तराई गॉव है।

भौगोलिक स्थितिः–

पहले नारायणी नदी के बॉढ के कहर का हर साल सामना करते–करते पचफेड़ा के लोगों के बहुत ही दुर्गती होती थी। नदी के बाढ़ के कारण यहॉ के लोगों के सामाजिक व आर्थिक जीवन प्रभावित होते थे। लेकिन नदी पर बाँध वन जाने के कारण अब कभी–कभी नारायणी के विकराल रूप धारण कर लेने पर ही पचफेड़ा नारायणी के बाढ़ से प्रभावित होता है, नही तो सामान्यतः पचफेड़ा की भूमि बहुत उपजाऊ हैं। जो भाठ(खादर) मिट्टी कहलाती है। और उस पर बाढ़ व सूखे का बहुत कम प्रभाव पड़ता है। यहाँ के लोग एक दशक पहले जंगल पार्टी के दस्युओं के खौफ के साये मे जीवन–यापन करते थे, लेकिन बिहार राज्य के बदले हुए राजनीतिक परिवेश में जंगल पार्टी व उनके खौफ का सफाया हो गया।

सामाजिक–आर्थिक स्थितिः–

पचफेड़ा गाँव की आबादी लगभग 4 हजार है।, जिसमें से लगभग 98% लोग कृषक या कृषक मजदूर के रूप में कृषि कार्य पर आश्रित है। यहॉ की आबादी मे 40% जनसंख्या राजभर बिरादरी की है, जो रहन–सहन में जनजातियों के करीब मालूम पड़ते है, लेकिन वे पिछड़ी जाति में आते हैं। 30% जनसंख्या 'नोनिया'' बिरादरी की है जो रहन–सहन व शिक्षा में अति पिछड़े, है। तथा ये भी पिछड़ी जाति में आते हैं। 15% जनसंख्या 'चमार' बिरादरी की है, जो अनुसूचित जाति में आते है। लगभग 5% जनसंख्या ब्राह्मण बिरादरी की है जो सामान्य श्रेणी में आते हैं। शेष लगभग 10% में अन्य बिरादरी जैसे लोहार, यादव, मुसलमान, मुसहर, गोंड आदि हैं।

पचफेड़ा में ब्राहमणों को छोड़ दिया जाय तो अन्य जातियों में शिक्षा का स्तर बहुत ही निम्न है, परन्तु अब उनकी नयी पीढ़ी शिक्षा के प्रति जागरूक हुई है और इनमें धीरे–धीरे शिक्षा का प्रसार हो रहा है। इस गॉव के ब्राहमण छोड़ अन्य जातियों के रहन–सहन बहुत ही दयनीय है तथा ये लोग बहुत ही कष्टकारी व अभावग्रस्त जीवन यापन कर रहे हैं। पचफेड़ा गॉव में जात–पात, छुआ–छूत जैसी रूढ़िवादी कुरीतियां आज भी विद्यमान है, जो पचफेड़ा गॉव के सामाजिक परिवर्तन के निम्न गति को दर्शाते हैं। यहॉ सामुदायिक कल्याण की सरकारी योजनाएं पात्र लोगों के लिए दूर की कौड़ी है, योजनाओं का बन्दरबॉट कर उनके संचालक ही अपनी जेब भरते हैं तथा इन्हें इनके हाल पर छोड़ देते हैं। पचफेड़ा गॉव के गहनता से अवलोकन व वहॉ के निवासियों का साक्षात्कार करने पर उनके बीच की समस्याएं जैसे भाग्यवादिता, रूढ़िवादिता (छुआ–छूत, ऊँच–नीच) लिंग भेद, कृषि के प्रति निराशा, अशिक्षा, जात–पात, निर्धनता, बेरोजगारी, नशा–खोरी व शोषण जैसी सामाजिक समस्याएं उभर कर आती है। जिससे यह प्रतीत होता है कि पचफेड़ा गॉव सामाजिक परिवर्तन व विकास में पिछड़ा हुआ है। परन्तु वर्तमान मे उनके बीच आपसी सामुदायिक सहयोग से अपने विकास व जीवन स्तर के सुधार की एक अनुकरणीय एवं सशक्त पहल की जा रही है जिससे उनके जीवन का लगभग हर पक्ष प्रभावित हो रहा है और उनके कष्टकारी व विकट

* शोध छात्र, उ0प्र0रा0ट0मु0वि0वि0, इलाहाबाद

सामाजिक समस्याओं का समाधान हो रहा हैं। उनके द्वारा चलाए जाने वाले सामुदायिक विकास का कार्यक्रम निम्नवत हैः–

(1) कृषि विकास हेतु कार्यक्रमः–

चूँकि पचफेड़ा में लगभग 98% लोग कृषि कार्य से जुड़े हुए हैं एवं उनकी स्थिति दयनीय है तो कहीं न कहीं दयनीय स्थिति का कारण कृषि ही है। वहाँ के कुछ जागरूक व शिक्षित नौजवानों ने वहॉ के लोगों की स्थिति में सुधार हेतु यह महसूस किया कि कृषि को लाभकारी बनाकर ही इनकी दशा को सुधारा जा सकता है। फलस्वरूप इन लोगों ने सबसे पहले यहॉ कृषि के लागत मे कमी तथा कृषि उत्पाद के उचित एवं लाभकारी मूल्य उपलब्ध कराने का पहल किया। पचफेड़ा गॉव के ज्यादातर किसान छोटे जोत के खेती वाले हैं। 70% कृषि योग्य भूमि लगभग यहॉ के 95% लोगों में वितरित है तथा 30% कृषि योग्य भूमि पर दो परिवारों का मालिकाना हक है। अधिकांश कृषक छोटी जोत के कारण कृषि के उन्नत व महंगे यंत्र नहीं रख सकते जिसका परिणाम होता है कि कृषि यंत्र रखने वाले लोग अनुचित किराया वसूल कर इन कृषकों का शोषण किया करते थे एंव इनकी कृषि घाटे में चली जाती थी। किसानों को इस समस्या से मुक्ति दिलाने के लिए यहॉ के कुछ सामर्थ्यवान शिक्षित नवयुवको ने मिलकर एक ट्रैक्टर खरीदा जिससे यहॉ के किसानों के खेत की जुताई केवल डीजल व ड्राइवर के खर्च पर होने लगी जिसका परिणाम यह हुआ कि किसानों के खेतों की जुताई जो 50 रूपये कट्ठे पर होती थी वह अब मात्र 18–20 रूपये कट्ठे पर होने लगी, परिणामस्वरूप जुताई के मद में किसानों के लागत में भारी कमी आयी। इनके इन कार्यों से जागरूक व प्रभावित होकर दो व्यक्तियों ने एक–एक पंपिंग सेट गॉव के किसानों के सहयोग हेतु उपलब्ध करा दिया। जिससे केवल डीजल डालकर मुफ्त में खेतों की सिंचाई होने लगी, फलस्वरूप वे पंम्पिग सेट विहिन कृषक जो खेत के सिंचाई हेतु 160–180 रूपये प्रति घण्टे की दर से खेती की सिंचाई कराते थे उनका खेत अब लगभग 50–60 रूपये प्रति घण्टे की दर से सींचा जाने लगा। इस प्रकार किसानों के खेती के लागत में भारी कमी आयी तथा लोगों में खेती के प्रति भारी उत्साह देखा जा रहा है। यहॉ के इस सामुदायिक पहल का प्रभाव यहॉ के लोगों के सामाजिक जीवन पर पड़ा। यहॉ के लोगों में जो आपसी वैमनस्यता जात–पात, ऊँच–नीच, अमीर–गरीब के रूप में व्याप्त थी जिसके कारण वे अक्सर संघर्ष करते रहते थे उसके स्थान पर उनमें भाईचारा एक–दूसरे का सहयोग तथा आपसी सहयोग से विकास करने की ललक जगी एवं उनमें तीव्र गति से सामाजिक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं।

2. कृषि उपज का उचित मूल्य दिलाना–

पचफेड़ा गॉव का मुख्य फसल गन्ना है। यहॉ लगभग 85% कृषि योग्य भूमि का उपयोग गन्ना उत्पादन में होता है। गन्ना इस गॉव का मुख्य नगदी फसल है। इसे बेच कर यहॉ के किसान अपनी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति करते हैं। परन्तु पचफेड़ा के अधिकांश कृषक प्रशासनिक लापरवाही, राजनीतिक उदासीनता , अपने अशिक्षा के कारण अपनी त्वरित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपने गन्ने की फसल को निर्धारित मूल्य से काफी कम औने–पौने दामों पर गन्ना माफियाओं व विचौलियों को बेच देते हैं और आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

परिणामस्वरूप इन गन्ना किसानों के त्वरित कार्य तो सम्पन्न हो जाते हैं परन्तु गन्ने से मिलने वाले वास्तविक लाभ से ये वंचित हो जाते हैं क्योकि उन्हें लगभग 300 रूपये प्रति क्विंटल निर्धारित गन्ना मूल्य की जगह 120–130 रूपये ही मिल पाते हैं। इस प्रकार गन्ने की खेती में लाभस्वरूप मिलने वाला ढेरो पैसा बिचौलिए के पास चला जाता है। किसानों को इस समस्या से मुक्ति दिलाने एवं उनके त्वरित आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तथा गन्ने का लाभकारी मूल्य उपलब्ध कराने हेतु वहॉ सामुदायिक सहयोग से लोगों को लघु फसल ऋण उपलब्ध कराने का कार्य किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत गॉव के कुछ सम्पन्न लोगों के समूह द्वारा एक कोष बनाया गया है। उस कोष से उन किसानों की मामूली ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराया जाता है जो किसान अपने किसी आकस्मिक कार्य को करने हेतु अपने गन्ने के फसल को औने–पौने दाम पर बेचने कों तैयार रहते हैं। ऋण वसूली हेतु गन्ने की फसल के निर्धारित मूल्य पर विक्रय के पश्चात सम्बन्धित किसान से जमा करा लिया जाता है। इस प्रकार इन किसानों के मेहनत का फसल लुटने से बच जाता है और उनको अपने फसल का लाभकारी मूल्य प्राप्त होता है जिसके फलस्वरूप वह अपने अन्य विकास (सामाजिक एवं आर्थिक) की कार्य योजना निर्मित कर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं, एवं उनमें तीव्र सामाजिक परिवर्तन की गति दृष्टिगोचर हो रही है।

3. सामुदायिक आर्थिक सहयोग–

पचफेड़ा गॉव के गरीब कृषक परिवार अपने आप को घोर संकट में घिरा हुआ तब पाते थे जब उनके परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती थी और उनके अन्तिम संस्कार व कर्मकाण्ड के निमित्त उनके पास संचित रूपये नहीं होते थे। उस समय उन परिवारेां पर दोहरा आघात लगता था। प्रायः वे अपने खेतों को बंधक रखकर किसी व्यक्ति से पैसे लेते या फिर किसी साहूकार से ऊँचे ब्याज दर पर ऋण लेते थे। उनके इस समस्या के समाधान हेतु उस गाँव के शिक्षित नौजावनों ने सामुदायिक सहयोग की एक अनूठी परम्परा शुरू की जिसमें गाँव के प्रत्येक परिवारों को रजामन्द करने का प्रयास किया गया कि किसी भी परिवार या जाति के व्यक्ति के यहॉ मृत्यु होने पर गाँव के शेष परिवार से 100/– रूपये का उसको सहयोग किया जाएगा। इस कार्य में यह निर्धारित किया गया कि वही परिवार आर्थिक सहयोग देगा जो अपने ऊपर भी इस प्रकार के विपत्ति के अवसर पर गाँव का आर्थिक सहयोग लेने को तैयार होगा। इस प्रकार आज लगभग गाँव के 300 परिवारों में 240 परिवार इस परम्परा में अपना सहयोग दे तथा ले रहे है। किसी परिवार में अगर कोई व्यक्ति मरता है तो उसकों गॉव के लोगों द्वारा निर्मित समिति तुरन्त गॉव से लगभग 24,000 रूपये इक्ट्ठा कर उस परिवार को देती है। इस सामुदायिक सहयोग ने उस गाँव में सामुदायिक भावना का सूत्रपात कर सामाजिक परिवर्तन की एक नई अनुकरणीय पहल का आगाज किया है जिसके फलस्वरूप लोगों ने जाति–पाति, वर्ग–भेद से ऊपर उठकर सामाजिक सामंजस्य स्थापित कर अपने तीव्र सामाजिक परिवर्तन का मापदण्ड स्थापित किया जिसकी चर्चा सुदूर क्षेत्रों में है।

गॉव के गरीब कृषकों के सम्मुख दूसरी प्रमुख समस्या अपने बेटियों की शादी के खर्च में आती है। जिसमे वे अक्सर अपनी खेती को बंधक रख देते हैं या उच्च ब्याज दर के बोझ तले दब जाते हैं। फलस्वरूप वे भूमिहीन हो जाते हैं और उनमें नगरीय पलायन होने लगता है तथा उनके परिवार पर अनेक गम्भीर संकट दस्तक दे देते हैं यथा खाद्यान्न संकट, ऋणग्रस्तता इत्यादि। ऋणग्रस्तता के तनाव से किसान अनेक अनैतिक व निन्दनीय कार्यों में संलिप्त व नशाखोरी जैसे गंभीर सामाजिक दुर्व्यसनों के दास बन जाते है और उसकी पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थिति उत्तरोत्तर अवनति के तरफ बढ़ती जाती है। इस समस्या से गाँव वालों को निजात दिलाने के लिए यहां के 15 लागों ने 10–10 हजार रूपये के सहयोग से 1,50,000/– रूपये का कोष बनाया है। इस कोष से लड़की की शादी करने वाले इच्छुक परिवारों को 10,000/– रूपये का ब्याज रहित सहयोग दिया जाता है। इस पैसे को अधिकतम 1 साल के अन्दर कृषक को लौटाना होता है। यही नहीं सामुदायिक कार्यक्रम से प्रभावित होकर एक शिक्षित एवं जागरूक व्यक्ति ने अपने पिता के स्मृति में उनके पुण्यतिथि में एक जनरेटर खरीद कर दे दिया जिससे लोगों के वहॉ विवाह एवं अन्य पारिवारिक उत्सवों में निःशुल्क डीजल के खर्चे पर उपलब्ध कराया जाता है जिससे गरीब लोगों के वहॉ शादी में जनरेटर के मद में खर्च होने वाला लगभग 3,000/– रूपये का बचत होता है।

उपरोक्त आर्थिक सहयोग से लोगों में आपसी भाई–चारा का भाव मजबूती के साथ स्थापित हो रहा है।

4. शिक्षा के सुधारः–

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बिना विकास एवं अनुकरणीय सामाजिक परिवर्तन की कल्पना बेईमानी होगी। पचफेड़ा गाँव के लोगों में शिक्षा का स्तर निम्न है एवं उनके पिछड़ेपन में कहीं न कहीं इसका महत्वपूर्ण योगदान है। गरीब कृषकों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रबन्ध हेतु वहॉ के लोग अपने स्थानीय नगर पडरौना के एक सामाजिक संगठन के सम्पर्क में है। पचफेडा गाँव में प्राथमिक विद्यालय है लेकिन उसमें छात्रों की तुलना में शिक्षकों की कमी है और जो शिक्षक है वे भी शिक्षण कार्य के प्रति उदासीन है। शिक्षण व्यवस्था को दुरूस्त करने हेतु सामाजिक संगठन के सहयोग से उनकी योजना गाँव के प्राथमिक विद्यालय को अंगीकृत कर उसमे तीन–चार अतिरिक्त अध्यापक रख कर प्राथमिक विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण का माहौल स्थापित करने की हैं। जिसकी अनुमति हेतु ये लोग अपने जिलाधिकारी के सम्पर्क में है। वहॉ के लोगों की यह नई सोच वहॉ के क्रान्तिकारी सामाजिक परिवर्तन की ओर इशारा करती है।

5. उच्च नैतिक पारम्परिक आदर्शों का संवहनः–

पचफेड़ा गॉव में गरीबी व अभावग्रस्तता के साथ जीवन यापन करते हुए वे नौजवान जो अपने नैतिक कर्तव्यों यथा वृद्ध माता पिता की सेवा, बच्चों के गुणात्मक शिक्षा के लिए प्रयास, परिवार के किसी सदस्य पर संकट आने पर उसका सहयोग आदि अनेक आदर्शों को विकट परिस्थिति में रहते हुए आत्मसात करने वाले महिला पुरूषों को समय–समय पर गाँव में सार्वजनिक समारोह आयोजित कर

सम्मानित करने का कार्य किया जाता है। जिससे अन्य लोगों में अपने परिवार के बुजुर्गों का सेवा, परिवार में गम्भीर संकट या बीमारी से पीड़ित व्यक्ति का सहयोग, बच्चों के अच्छे परवरिश के भाव का अनुकरण का माहौल बनता है जिससे गाँव में सामाजिक परिवर्तन का एक नया रूप परिलक्षित हो रहा है।

निष्कर्ष

अंत में निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पंचफेडा ग्राम में सामाजिक सुधार हेतु स्थानीय स्तर पर शुरू की गई पहल एक अनुकरणीय प्रयास है। बगैर किसी सरकारी सहायता के स्थानीय उत्साही नवयुवकों का प्रयास गॉव में गरीबी उन्मूलन में कारगर हो रहा है। सामाजिक समरसता बढ़ाने के साथ गॉव में कृषि विकास में नवाचार एवं उन्नत यंत्रों के प्रयोग ने उस गॉव को एक विशिष्ट पहचान दी। यह प्रयास यह प्रमाणित करता है कि सामाजिक परिवर्तन एवं विकास के लिए संकल्प, समर्पण और दूरदर्शिता महत्वपूर्ण होती है। काश भारत जो गॉवों का देश है–सभी गाँवों में यह प्रयास होता–हम फिर सोने की चिड़िया राष्ट्र के रूप में वैश्विक पटल पर स्थापित हो जाते।

सन्दर्भ सूची

1. Desai Neera And Thakkar Usha,2003,Women In Indian Society,NBT,New Delhi.
2. Beteille,Andre,2002.Sociology,Essays On Approach And Method,Oxford University Press, New Delhi.
3. सिंह प्रो0 श्यामधर 2009 वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व, सपना अशोक प्रकाशन, राम नगर, वाराणसी।